'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १२७ | वाराणसी, गुरुवार, ५ नवम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

रजौली (जम्मू) २३-६-'५९

खिलाकर खाना ही इन्सान की इन्सानियत है

आज सुबह हमने यहाँके लोगों से कहा था कि कुरान पढ़नेवाले हमारे पास आयें। हम किरात सुनना चाहते हैं। कुछ भाई आये थे और हमने उनसे घण्टाभर कुरान की किरात सुनी। फिर उनके साथ कुछ बातचीत भी की। हमने उनसे पूछा कि आपका कैसा चल रहा है? एक भाई बोले कि ठीक चल रहा है। सब लोग मुहब्बत से रहते हैं। कोई खास झगड़ा नहीं है। लोग अपनी-अपनी मेहनत, मशक्कत से जिंदगी बसर कर रहे हैं। दूसरे भाई ने कहा कि यहाँपर बहुत बड़ी जमात ऐसी है, जो जहालत में पड़ी है, वह कुछ जानती नहीं है और जाननेवाली एक छोटी जमात है, जो सबका खून चूसती है। उन्होंने कहा कि कुछ ऐसे लोग हैं, जो दूसरों को चूसते हैं। उन दोनों की बातें सुनकर हमें बड़ा ताज्जुब हुआ। हम सोचने लगे कि कुरानशरीफ लेकर आनेवाले दोनों शख्स इस तरह का मुख्तलिफ बयान देते हैं तो आखिर असलियत क्या है? हमने समझा कि दोनों बातें सही हैं। दोनों में कुछ हिस्सा सही है।

दो दृष्टियाँ

इन्सान का अपना-अपना नजरिया होता है। जब इन्सान ऊपर देखता है तो उसके दिल में हसद, जलन, ईर्ष्या पैदा होती है। लखपति, करोड़पति की तरफ देखता है तो दुःखी होता है। वह सोचता है कि मेरे पास तो सिर्फ लाख ही रुपये हैं। दूसरे के पास करोड़ रुपये हैं। वह कितना खुशहाल है। इस तरह वह अपने को कमजोर पाता है और उसके मन में हसद पैदा होती है। जो शख्स नीचे की तरफ देखता है, उसे दुःखी जमात दिखाई देती है। वह देखता है कि लोग कितने गरीब हैं, गये-बीते हैं। उनकी फिक्र करनेवाला कोई नहीं है तो वह समझता है कि इनसे मैं बहुत खुशहाल हूँ। मुझे ५० रुपये मिल रहे हैं। दुनिया में कई लोग ऐसे हैं, जिन्हें कुछ भी नहीं मिलता है। यों सोचकर वह अपने ५० रुपये में से ५ रुपये खैरात के लिए निकालता है। इस तरह नीचे देखने से ५० रुपयेवाले के दिल में हमदर्दी, रहम पैदा होती है और ऊपर देखने से ५ लाख पानेवाला भी दुःखी होता है।

पहाड़ पर पानी गिरता है तो नीचे की तरफ जाता है। यहाँ भी लोटाभर पानी डाला जाय तो वह नीचे की तरफ ही दौड़ेगा। पहाड़ के खयाल से यहाँकी जमीन निचान पर ही है। लेकिन यहाँका पानी इससे भी निचान की तरफ दौड़ता है। दुनिया का कुल पानी सबसे नीचे जो समुद्र है, उसकी तरफ दौड़ता है। यहाँका पानी यह नहीं सोचता है कि समुद्र की तरफ जाना तो पहाड़वाले पानी का काम है, मेरा नहीं। पानी की यह सिफत हमें लेनी चाहिए। जैसे पानी हमेशा निचान की तरफ दौड़ता है, वैसे ही हमें उससे सबक लेना चाहिए कि हमें भी समाज में जो सबसे दुःखी हैं, गरीब हैं, उनकी इमदाद में दौड़ना चाहिए। मुझे दो रोटी की भूख है और मेरे पास एक ही रोटी है, तब भी उसमें से एक टुकड़ा दूसरे को देना चाहिए और फिर बची हुई रोटी खानी चाहिए, यही इन्सान का फर्ज है। इसीमें इन्सानियत है। अगर ऊपर देखा करोगे तो दिल में खयाल आयेगा कि हमें और ज्यादा मिलना चाहिए। इस तरह हवस को बढ़ाते जाना—यह इन्सानियत नहीं है। यह तो इन्सान के जिस्म में छिपी हुई हैवानियत है।

इन्सान की शोभा

घर में खाना भरा हुआ होने पर भी इन्सान फाका करता है, रोजा रखता है, यही उसकी इन्सानियत है। इन्सान को अपने इंद्रियों पर जब्त रखना चाहिए। उसे सोचना चाहिए कि मैं दुःखी हूँ, लेकिन मुझसे भी कोई ज्यादा दुःखी है। उसकी तलाश में मुझे जाना चाहिए और उसे ढूँढकर उसकी इमदाद करनी चाहिए। इन्सान के लिए यही जीनत है, शौकत है, शान है कि दूसरे को खिलाकर खाये, पिलाकर पीये। टिकट आफिस में हर कोई कहता है कि मुझे पहले टिकट मिलना चाहिए। यह इन्सानियत नहीं है। इन्सान को सोचना चाहिए कि पहले दूसरे को मिले, फिर मुझे मिले। पहले दूसरों को खाना मिले, फिर मुझे मिले। हर कुनबे में माँ की इज्जत सबसे ज्यादा है, क्योंकि वह सबको खिलाकर खायेगी, पिलाकर पीयेगी, सुलाकर सोयेगी। अगर माँ बच्चे से कहे कि बेटा घर में एक ही पाव दूध है, मैं कमजोर हो जाऊँगी तो तेरी खिदमत कैसे कर पाऊँगी, इसलिए उस दूध पर पहला हक मेरा है। मैं पहले दूध पीऊँगी और फिर बचेगा तो तू पी सकेगा तो उसकी इज्जत नहीं रहेगी। लेकिन माँ कहती है कि बेटा दूध थोड़ा है, तू पहले पी ले। इन्सानियत इसीमें है कि

www.vinoba.in

हम यह देखें कि अपने से भी ज्यादा गिरी हुई हालत में कोई शख्स है तो उसकी तलाश की जाय और उसकी खिदमत की जाय। कोई शख्स यह नहीं कह सकता है कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा दुःखी हूँ। यह अल्लाह की कुदरत है कि यहाँ एक से एक बढ़कर ऊँचे और नीचे लोग हैं। इसलिए जो गिरी हुई हालत में है, वह भी पायेगा कि कोई मुझसे भी गरीब है तो मुझे उसकी इमदाद करनी चाहिए। यही विचार है, जो मुझे घुमाने की ताकत दे रहा है। बहुत खुशी की बात है कि यहाँपर सरकार के सीलिंग के बावजूद भी लोग प्रेम से दान दे रहे हैं। लोग सोचते हैं कि बाबा आया है तो देना पड़ेगा। बाबा के पास कौन सी सल्तनत है? लोग क्यों इस तरह मजबूर होते हैं और सोचते हैं कि देना पड़ेगा? इसीलिए कि बाबा आपको इन्सानियत की राह दिखाता है। आपका तवज्जू इस तरफ खींचना चाहता है कि दुःखियों को मदद करना दुःखी का भी काम है।

मैं दुबारा पानी की मिसाल देना चाहता हूँ। कुएँ से आप एक बाल्टीभर पानी निकाल लेते हैं तो कुएँ में बाल्टी की शक्ल का गड्ढा नहीं पड़ता है, क्योंकि पानी के बूँदों में इतनी हमदर्दी है कि जहाँ आपने पानी निकाला, वहाँ चारों तरफ से पानी की बूँदे गड्ढा भरने के लिए दौड़ती हैं और गड्ढे को पाट देती हैं। लेकिन गेहूँ के ढेर में से आप एक सेर गेहूँ निकाल लीजिये तो यह नजारा दीखता है कि उसमें एक गड्ढा पड़ता है। गेहूँ इतने बेवकूफ और खुदगर्ज होते हैं कि ऐसे ही बैठे रहते हैं। गड्ढा भरने के लिए दौड़ते नहीं। लेकिन कुछ महात्मा गेहूँ गड्ढे की तरफ दौड़े जाते हैं। पानी की बूँदों से हमें सबक सीखना चाहिए। बाबा की यह माँग है कि चाहे आप खुशहाल हों या दुःखी, आपको कुछ न कुछ देना चाहिए। देने की फिज्रा पैदा करनी है। देना इन्सान का फर्ज है, यूँ समझकर देना चाहिए। अगर हर कोई इस बात को समझेगा और देने लगेगा तो क्या हालत होगी! जरा मन में तशब्बू करो। आप देगें तो अपने दो हाथों से ही देगें। लेकिन जब पायेंगे तो समाज के हजारों हाथों से पायेंगे, जो देगा, वह भर-भर के पायेगा। आपको सबका प्यार मिलेगा। किसान इस बात को जानता है। वह जमीन को एक दाना देता है तो जमीन उसे एक ही दाना नहीं लौटाती है, बल्कि सौ दाने देती है। यही अल्लाह की कुदरत है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि आप अपने दो हाथों से देते चले जाइये तो हजार हाथों से पाइये। देने में बड़ा लुत्फ आयेगा। देने का सौदा बड़ा फायदेमन्द है।

चालीस करोड़ एकड़ का मालिक!

मेरी माँग है कि हर कोई दान दे। बेजमीन के लिए अपनी जमीन का कुछ-न-कुछ हिस्सा देना हरएक का फर्ज है। उससे आपमें और उनमें प्यार बनेगा। मैं चाहता हूँ कि अल्लाह आपके दिल में हमदर्दी पैदा करे। अल्लाह करेगा, तभी यह होगा। मेरा उसीपर भरोसा है। मेरा काम इतना ही है कि मुझे जो जमीन मिलेगी, वह मैं गरीबों के पास पहुँचा दूँगा। आज मेरे पास बीसों अर्जियाँ आयी हैं, जिनमें लोगों ने अपने दुखड़े रोये हैं और जमीन की माँग की है। मेरे पास कौन-सी ताकत है कि इन सबके दुःख में दूर करूँ? मेरे पास यही ताकत है कि मैं आपके दिल में पैठ सकता हूँ। यही मेरा सरमाया, पूँजी है, जिसके भरोसे मैं बड़ा सरमायेदार बना हूँ। क्या आप जानते हैं कि मेरी जायदाद कितनी है। मैं चालीस एकड़ का मालिक हूँ। मैं नहीं मानता कि हिंदुस्तान में और कोई मालिक है, जो मेरी बराबरी कर सकता है। लेकिन फिर भी मेरे पास अपनी एक धोती के अलावा और कुछ भी नहीं है। एक हाथ से लेना और दूसरे हाथ से देना, यही मेरा काम है। आप मुझे जमीन देंगे तो मैं बेजमीन में तकसीम करूँगा, आप नहीं देगें तो क्या बाटूँगा? मेरे पास जो इल्म है, हमदर्दी और प्रेम है वह मैं आपको देता चला जाऊँगा। आप मुझे दान दें, या न दें, लेकिन आप नहीं देगें तो बेजमीनों को कुछ नहीं मिलेगा।

मैं देख रहा हूँ कि कश्मीर के लोगों के दिल तैयार हैं। जमीन तपी हुई हो तो पहली बारिश होने पर वह पानी को चूस लेती है, क्योंकि वह प्यासी होती है। वैसे ही यहाँ प्रेम की प्यास है। मुझे यहाँ अजीब तजुरबा हो रहा है। पहले मुझे इतना खयाल नहीं था कि मैं कश्मीर जाऊँगा तो इतनी हमदर्दी, इतना नरम दिल दीखेगा और इतने प्रेम के प्यासे लोग मिलेंगे। यहाँ मुझे जो तजुरबा हो रहा है, उससे मुझे लगता है कि अल्लाह का फज्ल इस मुल्क पर है। इससे यहाँ बहुत काम बनेगा।

खामोशी की ताकत

यहाँपर हम सबने मिलकर खामोशी में भगवान की प्रार्थना की। इस तरह सब मजहबवालों को इकट्ठा होकर प्रार्थना करनी चाहिए। खामोशी में एक रूहानी तजुरबा होता है कि चाहे हम सब बाहर से अलग अलग दीखते हों तो भी अन्दर से एक हैं। इसीलिए हमने खामोशी का, मौन का तरीका रखा है। जहाँ मुख्तलिफ मजहबवाले लोग होते हैं, वहाँ उन सबको इकट्ठा बैठकर खामोशी में, भगवान में गोता लगाना चाहिए। उसका दिलपर बड़ा असर होता है और दिल की ताकत बढ़ती है। भगवान का नाम लेकर हमें अलग-अलग नहीं होना चाहिए। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

बम्मनवाडी (जम्मू) १३-९-'५९

हम हक (कानून) को हटाना चाहते हैं

यह एक बड़ा गाँव है। अक्सर हमारे गाँव ५०-६० घरों के होते हैं। यह गाँव ८०० घरों का है। अक्सर छोटे गाँव में प्रेम, मित्रता होती है और बड़े शहरों में आधुनिक ज्ञान की, विज्ञान की सुलभता। बीचवाले गाँवों में बड़े शहर और छोटे गाँव की खूबियाँ भी इकट्ठी हो सकती हैं और खामियाँ भी। छोटे गाँव में मेहनत, मशक्कत करने का माद्दा होता है और प्रेम होता है। वहाँ अगर शहर से ज्ञान और विज्ञान भी आ जाय तो त्रिवेणी-संगम हो जाय। ऐसे शहर में भी प्रेम तो होता ही है। शहर और गाँव में लोग परिवारों में रहते हैं। परिवार में प्रेम होता ही है। हर बच्चों को जन्म के साथ ही प्रेम की तालीम मिले, ऐसा मंसूबा परमात्मा ने बनाया है। वह हर बच्चे को माता के उदर में जन्म देता है, जिसका नतीजा यह होता है कि बच्चे को पहले दिन से ही प्रेम की तालीम मिलने लगती है। अगर ऐसा नहीं होता और ईश्वर ने प्रेम की तालीम देने की जिम्मेवारी सरकार पर सौंपी होती तो क्या हालत होती? लेकिन वह बहुत जरूरी चीज थी, इसलिए ईश्वर ने प्रेम की जिम्मेवारी सरकार या समाज व्यव-

www.vinoba.in

स्थापकों को नहीं सौंपी। इसलिए चाहे शहर हो या देहात, प्रेम सब जगह मिलता है।

दो जमातें

प्रेम की योजना के बावजूद दुनिया के दो टुकड़े हो गये हैं। जो लोग मेहनत करते हैं, उनके पास इल्म नहीं है और जिनके पास इल्म है, वे मेहनत करना जानते नहीं और चाहते भी नहीं हैं। इस तरह दो जमातों के बीच दुनियाभर में कशमकश जारी है। मेहनत करनेवालों को कम से कम मजदूरी दी जाती है और इल्मवालों को ज्यादा। इल्मवाले लोग समझते हैं कि उनकी तहजीब, संस्कृति ऊँची है। इसलिए उनको ज्यादा तनख्वाह मिलनी ही चाहिए। ज्यादा सहूलियतें, पेन्शन, छुट्टियाँ वगैरह मिलनी ही चाहिए। यह सारा जरूरी समझकर किया जाता है। लेकिन मेहनत करनेवालों के लिए इस प्रकार का अभी तक कोई इंतजाम करना मुमकिन नहीं हुआ है और न सोचा ही गया है। अभी कुछ लोग इस बारे में सोच रहे हैं कि इल्मवालों को जितनी सहूलियतें मिलती हैं, उतनी सब मेहनत करनेवालों को भी मिलनी चाहिए। ऐसा सोचनेवालों के तरह-तरह के विचार और वाद पैदा हुए हैं। उन्हें समाजवाद, साम्यवाद वगैरह कहते हैं। ऊपरवालों को जो सहूलियतें हासिल हैं, वे सब नीचेवालों को जरूर मिलनी चाहिए। लेकिन उतने से मसला हल नहीं होगा। और न उतने से मुकम्मिल जिन्दगी बनेगी, न पूरी तसल्ली ही यानी न पूर्ण समाधान ही हासिल होगा। वह तब तक हासिल नहीं होगा, जब तक हम इन दो गुणों को, इल्म और अमल को, ज्ञान और कर्म को एक नहीं करेंगे। हर इन्सान की जिन्दगी में दोनों के लिए मौका होना चाहिए। हम इस तरह की जिंदगी बनायेंगे, तभी मसला हल होगा और इन्सान के दिल के अन्दर की कशमकश मिटेगी।

सहयोग के बिना काम नहीं होगा

बड़े शहर और छोटे गाँव की खूबियाँ इकट्ठा करने से आपके गाँव के जैसे बीच के गाँव खूब खूबसूरत बन सकते हैं। आप इल्म और अमल, दोनों को इकट्ठा करें तो आपकी ताकत बनेगी और जिन्दगी पूर्ण मुकम्मिल बनेगी। सवाल यह है कि यह विचार तो अच्छा है, लेकिन जीवन में इसपर अमल कैसे किया जाय? उसकी कहाँसे शुरुआत, इफ्तेदाह हो? राह कहाँसे निकलेगी? सरकार ने दो पाँच सालाना मंसूबे बनाये। अब तीसरा तैयार हो रहा है। कहा जाता है कि सरकार योजना तो बनाती है, लेकिन लोगों की तरफ से कुछ काम नहीं हो रहा है। ऊपर से लादा हुआ काम कहाँ तक चलेगा? नीचेवाले तबके के लोग, देहात के लोग उत्साहपूर्वक सरकारी योजनाओं में सहयोग नहीं देंगे तो काम कैसे चलेगा? सरकारी योजना और लोगों का काम—इन दो हाथों से ताली बजेगी। लेकिन आज एक ही हाथ से ताली बजाने की कोशिश हो रही है, इसलिए ताली बजती नहीं है। दो हाथों से ताली बजे तो भी मेरी तसल्ली, समाधान नहीं होगा। ताली बजती है, तो उसमें एक हाथ जेर और दूसरा हाथ जबर होना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि सरकार का हाथ जेर और लोगों का हाथ जबर हो।

बेजबान समाज

आज गाँव में मुख्तलिफ जातियाँ कुनबे वगैरह हैं, लेकिन समाज नहीं है। किसीपर कोई खास आफत आयी, जो देखी नहीं जाती है तो हम शर्म, सहानुभूति के तौर पर उसे थोड़ी मदद कर देते हैं, जिससे कि दिल को तसल्ली हो और हम खाने बैठें तो खाना न चुभे। अगर हम मदद न करें तो अन्दर से आवाज आयेगी कि तेरा पड़ोसी बीमार है, उसके लिए दवा का, खाने का कोई इन्तजाम नहीं है, इस हालत में तू मिठाई खा रहा है तो यह कहाँ तक उचित है? इन्सान के दिल से इस तरह जो आवाज उठती है, वही भगवान की आवाज है। वह आवाज न चुभे, इसलिए हम लाचार होकर थोड़ी-सी मदद कर लेते हैं। कोई बहुत ज्यादा बीमार हो, मरने की तैयारी में हो तो हम उसे देखने जाते हैं, जिससे कि हमें तसल्ली हो जाय कि हम उसे देख आये। लेकिन ऐसी योजना नहीं करते, ऐसा जीवन नहीं बनाते कि दुखियों का दुःख जैसी कोई चीज ही न रहे। दुःखी हैं तो हम सब दुःखी हैं, सुखी हैं तो हम सब सुखी हैं, यह करना चाहिए। जिस्म में पाँव दुखी हो और आँख सुखी हो, ऐसा नहीं होता। कुल मिलाकर सारे जिस्म के ही जुज हैं, इसलिए एक जुज दुःखी हो तो सारा जिस्म दुखी बनता है। मरे हुए मनुष्य के जिस्म में एक जुज का दुःख दूसरे को नहीं छूता है। वैसे ही आज के समाज में एक का दुःख दूसरे को नहीं छूता है। दो लोग हों तो दोनों के दोनों एक दूसरे के सुख-दुःख से अछूते रहते हैं। अपना-अपना सुख-दुःख भोगते रहते हैं और समझते हैं कि यह तो अपना-अपना नसीब है।

भगवान का न्याय!

हमें सोचना चाहिए कि अगर हमारा मिला-जुला मुश्तरका नसीब न होता तो हम एक ही गाँव में और एक ही मानव-योनि में पैदा क्यों होते? हम सब इन्सान बनकर एक ही गाँव में पैदा हुए हैं तो हमें समझना चाहिए कि हमारा अलग-अलग नसीब तो है ही, लेकिन सबका मिला-जुला नसीब भी है। गाँव के एक लड़के ने बीड़ी पीकर उसे बिना बुझाये ही कहीं फेंक दिया और वह एक झोंपड़ी पर जा पड़ी तो नतीजा क्या हुआ? यही कि झोंपड़ी में आग लगी और फिर सारा गाँव जल गया। चाहे एक लड़के ने गलत काम किया तो भी उसका फल सारे गाँव को चखना पड़ा। ईश्वर के घर का यह न्याय है? हमें समझना चाहिए कि भगवान उस लड़के को गाँव से अलग नहीं मानता है। अगर मैं किसीको तमाचा मारूँ और कहूँ कि मैंने नहीं मारा, हाथ ने मारा है तो क्या यह कहना ठीक होगा? वैसे ही भगवान कहेगा कि तुम्हारे गाँव के लड़के की गलती याने तुम्हारी ही गलती है। तुमने उसे समझाया नहीं कि बीड़ी नहीं पीना चाहिए और पीना हो है तो कैसे पीना चाहिए। इसलिए लड़के की भूल में तुम भी भागीदार हो। अगर भगवान उस अकेले लड़के की गलती मानता तो उसीको फल देता, लेकिन वह सबको फल देता है। इसके मानी यह हैं कि या तो भगवान के घर में इन्साफ नहीं है या भगवान के सोचने का ढंग दूसरा है। हम यह नहीं मान सकते हैं कि भगवान के घर में इन्साफ नहीं है, इसलिए हमें समझना चाहिए कि वहाँपर किसी एक मनुष्य को सबसे अलग मानने की बात नहीं है।

तरीका बदलिये

हर कोई अपना-अपना नसीब भोगेगा, इस तरह सोचने से उसका जीवन अच्छा नहीं बनेगा। इसलिए आपको अपने गाँव को एक कुनबा मानकर गाँव के लिए मंसूबा बनाना चाहिए। फिर सरकार मदद करे तो ठीक, न करे तो भी कोई हर्ज नहीं।

www.vinoba.in

आज तो मंसूबा देहली बनाती है, देहात नहीं। मैं कहना चाहता हूँ कि हर देहात अपनी अक्ल से अपनी योजना, मंसूबा बनाये तो चाहे वह कमजोर बने या उसमें नुक्स भी रह जायँ, पर उससे देहात की तरक्की होगी। गाँववाले चाहें तो ऊपर से उन्हें सलाह दी जा सकती है। लेकिन उनपर ऊपर से कोई योजना लादी नहीं जानी चाहिए। इस तरह जब देहात अपनी योजना आप करेगा, तब देहात का हाथ जबर बनेगा और सरकार का जेर। फिर ताली बजेगी। आज सरकार का हाथ जबर है, देहात-वाले कुछ करते ही नहीं हैं, इसलिए ताली बजती नहीं। सरकार के पैसे यूँ ही खर्च होते जा रहे हैं। गाँवों के पास कुछ नहीं पहुँच रहा है। इसलिए गाँववालों को उठ खड़े होना चाहिए, अपनी ताकत बनानी चाहिए। फिर सरकार से जो मदद मिलेगी, वह लादी नहीं जायगी, ली जायगी और गाँववाले उसका उपयोग अपनी अक्ल से करेंगे। नतीजा यह होगा कि गाँव में सोचने का माद्दा आयेगा, जो आज नहीं दीखता है। आज उनके हाथ काम करते हैं और दिल काम करता है, लेकिन जब वे अपना मंसूबा आप बनाने लगेंगे तो दिमाग भी काम करने लग जायगा। हाथ, दिमाग और दिल—तीनों के इकट्ठा होने से गाँववाले बहुत अच्छी तरह से काम कर सकेंगे।

भूदान, ग्रामदान, शांति-सेना—ये सारे काम हम इसीलिए चला रहे हैं कि आज लोगों की आत्मशक्ति जाग जाय। आत्मा में जो शक्ति पड़ी है, उसका आपको एहसास हो। गाँव के लोग जब उठ खड़े होंगे और सारे गाँव का सोचने लगेंगे तो आज जो कानून घर में चलता है, वही गाँवभर में लागू होगा। घर में बाप ने एक रुपया कमाया, माँ ने बारह आने कमाये, लड़के ने चार आने कमाये और छोटे लड़के ने कुछ भी नहीं कमाया तो यह नहीं होता है कि जो जितना कमाये, उतना खाये। बाप एक रुपये का खाये, माँ आठ आने का खाये, बड़ा लड़का चार आने का खाये और छोटा लड़का भूखा रहे। बल्कि सबकी कमाई इकट्ठा की जाती है, सबकी मुश्तरका कमाई मानी जाती है और जिसको जितनी भूख है, वह उतना खाता है। वहाँ 'मेरी' कमाई नहीं कहा जाता है, 'हमारी' कहा जाता है। हमारी दो रुपया कमाई है, ऐसा कहा जाता है। जैसे हमने घर में 'मेरी' तोड़ी और हमारी जोड़ी, वैसे ही गाँव में भी 'हमारी' वाली बात चलानी है। जमीन, दौलत, श्रमशक्ति, सब हमारी, गाँव की है, ऐसा समझना चाहिए। घर में 'मेरी' वाली बात नहीं चलती है, इसीलिए सुख और शांति रहती है। आज जिन घरों में 'मेरी' वाली बात दाखिल हो गयी है, वहाँसे शांति मिट गयी है।

भाई-भाई का क्यों नहीं बनता ?

कुछ लोग सवाल पूछते हैं कि जहाँ एक घर में भाई-भाई की नहीं बनती है, वहाँ आप सारे गाँव को इकट्ठा करने की बात करते हैं तो यह कैसे बनेगा ? पूछनेवाले समझते हैं कि हमने ऐसा सवाल पूछा है, जिससे बाबा लाजवाब हो जायँगे। लेकिन मैं जवाब देता हूँ कि घर में भाई-भाई की इसीलिए नहीं बनती है, क्योंकि पहले जहाँ पहले प्रेम था, वहाँ कानून दाखिल हो गया है। कानून में भाई का हक, बहन का हक, बीवी का हक वगैरह चलता है। अगर कानून दखल न देता तो घर में प्रेम ही रहता और एक बात यह है कि जहाँ शख्सी मिलकियत मिट जाती है, वहाँ कानून दखल नहीं देता। फिर वहाँ भाई-भाई का नाता न रहकर मित्र-मित्र का नाता बन जाता है। कानून ने भाइयों को तबाह कर दिया है। दुनिया में सबसे ज्यादा दुश्मनी कौन करते हैं ? (१) दुश्मन (२) भाई-भाई। कौरव पांडव दुश्मनी कर सकते थे, क्योंकि भाई-भाई थे। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान दुश्मनी कर सकते हैं, क्योंकि भाई-भाई हैं। इस तरह दुश्मनों की और भाइयों की दुश्मनी चलती है। लेकिन मित्रों की दुश्मनी नहीं हो सकती है। मैं गाँव का मित्र-समाज बनाना चाहता हूँ। वहाँसे कानून हटाना चाहता हूँ। मित्र का नाता सबसे श्रेष्ठ है, सुन्दर है, अद्भुत है। मित्र एक-दूसरे को मदद करते हैं। एक-दूसरे पर कोई हक नहीं मानते हैं, बल्कि अपना हक, फर्ज अदा करते हैं। लेकिन घर में हक की बात चलती है। पत्नी ने पचास दफा आज्ञा मानी, लेकिन एक दफा नहीं मानी तो पतिराज यह बात कतई भूल जाते हैं कि उसने पचास दफा आज्ञा मानी थी। वे तो उतना ही याद रखते हैं कि एक दफा नहीं मानी थी। क्योंकि पति समझता है कि पत्नी पर अपना हक है, इस-लिए एक दफा नहीं मानी तो बड़ा पाप हुआ ! पचास दफा मानी तो पुण्य नहीं हुआ। लेकिन मित्र जिन्दगी में एक दफा मदद करे तो हम उसका उपकार मानते हैं और उस बात को कभी नहीं भूलते। क्योंकि मित्रों में किसीका किसीपर कोई हक नहीं रहता है। मित्रों में जो अन्योन्य उपकार की भावना होती है, उसे हम लाना चाहते हैं और कुनबे में जो हक की बात चलती है, उसे हटाना चाहते हैं। इसलिए भाई-भाई का नहीं बनता है, लेकिन गाँव का बन सकता है। जिन कारणों से भाई भाई का नहीं बनता है, उन कारणों को हम हटाना चाहते हैं। ◆◆◆

प्रश्न : क्या सर्वोदय-पात्र पर आधारित रहने का अर्थ संन्यासी बन जाना नहीं है ?

विनोबाजी : जो नहीं। क्या आपकी फौज के सिपाही संन्यासी होते हैं ? नहीं, तो शान्ति-सैनिक भी संन्यासी कैसे हो सकते हैं ? वे भी तो सिपाही ही हैं। सारा समाज जिस स्तर का है, उसी स्तर के शान्ति-सैनिक हैं, यों समझकर हरएक को उसके लिए मुट्ठीभर देना चाहिए और यों समझकर ही उसे लेना भी चाहिए। इसमें ऊँचे स्तर की अपेक्षा करना गलत है।

अनुक्रम

१. खिलाकर खाना ही इन्सान की इन्सानियत है
रजौली २३ जून '५९ पृष्ठ ७५५
२. हम हक (कानून) को हटाना चाहते हैं
बम्मनवाड़ी १३ सितम्बर '५९ ,, ७५६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in